

शिक्षा से स्वावलंबन: गांधीवादी दृष्टिकोण का एक अध्ययन

रजत मिश्र¹, डॉ० निलय तिवारी²

¹शोधार्थी

²सह आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, गौतम बुद्ध राजकीय महाविद्यालय, अयोध्या सम्बद्ध (डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या)

Received: 20 July 2025 Accepted & Reviewed: 25 July 2025, Published: 31 July 2025

Abstract

भारतीय चिंतन परंपरा में शिक्षा को सदैव केवल ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण के माध्यम के रूप में देखा गया है। महात्मा गांधी ने भी शिक्षा को इसी व्यापक दृष्टि से समझा तथा इसे मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास से जोड़ने का प्रयास किया। गांधी के अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना है जो आत्मनिर्भर, नैतिक, श्रमशील और सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त हो। उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमताओं के विकास का साधन माना तथा इस बात पर बल दिया कि शिक्षा व्यक्ति को जीवनोपयोगी कौशलों से संपन्न बनाते हुए उसे स्वावलंबन की दिशा में अग्रसर करे। गांधी द्वारा प्रतिपादित 'नई तालीम' की अवधारणा इसी दृष्टिकोण पर आधारित थी। नई तालीम केवल पाठ्य ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें शिक्षा को श्रम, उत्पादक कार्य, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक जीवन से जोड़ने का प्रयास किया गया था। गांधी का विश्वास था कि शिक्षा तभी सार्थक हो सकती है जब वह व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनने की क्षमता प्रदान करे तथा उसे समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने के योग्य बनाए। गांधी यह मानते थे कि शिक्षा और श्रम के बीच कृत्रिम विभाजन समाज में असंतुलन उत्पन्न करता है। इसी कारण उन्होंने शिक्षा प्रक्रिया में हस्तकला, उत्पादक कार्य और व्यावहारिक प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण स्थान दिया। उनका विचार था कि शिक्षा व्यक्ति के हाथ, मस्तिष्क और हृदय- तीनों का समान रूप से विकास करे। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति को केवल बौद्धिक रूप से सक्षम नहीं बनाती, बल्कि उसे जीवन के वास्तविक अनुभवों से भी जोड़ती है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। बढ़ती बेरोजगारी, कौशल-अभाव, शिक्षा का व्यावसायीकरण तथा शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती दूरी जैसी समस्याएँ शिक्षा व्यवस्था की सीमाओं को स्पष्ट करती हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी अनेक युवा रोजगार और आत्मनिर्भरता की समस्याओं से जूझ रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में गांधी का शिक्षा-दर्शन पुनः महत्वपूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि उसमें शिक्षा को केवल रोजगार की प्राप्ति तक सीमित न रखकर जीवनोपयोगी कौशल, स्वावलंबन और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में गांधी के शिक्षा संबंधी विचारों, विशेष रूप से नई तालीम और स्वावलंबन की अवधारणा का विश्लेषण किया गया है। साथ ही वर्तमान सामाजिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों के संदर्भ में गांधीवादी शिक्षा-दृष्टिकोण की प्रासंगिकता का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष यह इंगित करता है कि गांधी की शिक्षा संबंधी अवधारणाएँ केवल ऐतिहासिक महत्व की नहीं हैं, बल्कि वर्तमान समय की समस्याओं के समाधान के लिए भी एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करती हैं। गांधी ने शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा था — "By education I mean an all round drawing out of the best in child and man — body, mind and spirit" (शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में निहित सर्वोत्तम

गुणों के सर्वांगीण विकास से है।) यह कथन गांधी के शिक्षा-दर्शन की मूल भावना को व्यक्त करता है, जिसमें शिक्षा को व्यक्ति के संपूर्ण विकास तथा स्वावलंबन के साथ जोड़ा गया है।

मुख्य शब्द: गांधी, नई तालीम, स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता, शिक्षा, कौशल विकास।

Introduction

शिक्षा मानव जीवन के विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। किसी भी समाज की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक उन्नति उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के व्यक्तित्व, विचार, व्यवहार तथा जीवन-दृष्टि को निर्मित करने का एक प्रभावी माध्यम भी है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को सदैव जीवनोपयोगी और मूल्यपरक दृष्टि से देखा गया है। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में ज्ञान के साथ-साथ चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, श्रम तथा नैतिक मूल्यों पर विशेष बल दिया जाता था। किंतु औपनिवेशिक शासनकाल में शिक्षा का स्वरूप मुख्यतः प्रशासनिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित हो गया। अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना था जो प्रशासनिक कार्यों में सहायक हो सकें। इस प्रकार शिक्षा का संबंध व्यक्ति की जीवनगत आवश्यकताओं, स्थानीय परिस्थितियों और उत्पादन से धीरे-धीरे कम होता गया। महात्मा गांधी ने इस शिक्षा प्रणाली की गंभीर आलोचना की। गांधी का मानना था कि औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था भारतीय समाज की वास्तविक आवश्यकताओं से पृथक् थी तथा यह व्यक्ति को उसकी संस्कृति, श्रम और सामाजिक जीवन से दूर कर देती थी। उनके अनुसार ऐसी शिक्षा व्यक्ति को केवल नौकरी प्राप्त करने का साधन बनाती है, जबकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के भीतर निहित क्षमताओं का विकास करना होना चाहिए। गांधी ने स्पष्ट किया कि शिक्षा केवल साक्षरता तक सीमित नहीं हो सकती; उसका लक्ष्य व्यक्ति को आर्थिक, सामाजिक और नैतिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना होना चाहिए। गांधी द्वारा प्रतिपादित नई तालीम इसी विचारधारा का परिणाम थी। नई तालीम का उद्देश्य शिक्षा को जीवन और उत्पादन प्रक्रिया से जोड़ना था। गांधी का विश्वास था कि शिक्षा में हस्तकला, उत्पादक कार्य और श्रम को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए, क्योंकि श्रम व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके अनुसार यदि शिक्षा व्यक्ति को जीवनोपयोगी कौशलों से युक्त नहीं बनाती, तो वह अपने उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सकती। गांधी की दृष्टि में स्वावलंबन केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता तक सीमित नहीं था, बल्कि यह मानसिक, नैतिक और सामाजिक स्वतंत्रता से भी जुड़ा हुआ था। वे ऐसे समाज की कल्पना करते थे जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमताओं का उपयोग करते हुए सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके और समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभा सके। इसी कारण उन्होंने शिक्षा और स्वावलंबन के मध्य गहरा संबंध स्थापित किया। उनका विचार था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को दूसरों पर निर्भर बनाने के बजाय उसकी सृजनात्मक क्षमता और आत्मविश्वास का विकास करे।

वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। बढ़ती बेरोजगारी, कौशल विकास की कमी, शिक्षा का व्यावसायीकरण, डिग्री-केंद्रित दृष्टिकोण तथा शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती दूरी आज गंभीर चिंताओं के विषय हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी अनेक युवा रोजगार के अवसरों के अभाव तथा व्यावहारिक कौशल की कमी के कारण आत्मनिर्भर बनने में कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत "आत्मनिर्भर भारत" की अवधारणा के संदर्भ में यह प्रश्न और अधिक महत्वपूर्ण

हो जाता है कि शिक्षा व्यक्ति को किस प्रकार आत्मनिर्भर बना सकती है। ऐसी परिस्थितियों में गांधी का शिक्षा-दर्शन पुनः महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। गांधीवादी शिक्षा-दृष्टिकोण शिक्षा को केवल सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया न मानकर जीवन-कौशल, नैतिकता, श्रम और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ता है। यह दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की सीमाओं को समझने तथा वैकल्पिक शिक्षा मॉडल प्रस्तुत करने में सहायक हो सकता है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक विकास से भी जोड़ा। इसी संदर्भ में उन्होंने कहा है – “Literary education is of no value, if it is not able to build up a sound character.” (यदि शिक्षा एक सुदृढ़ चरित्र का निर्माण करने में सक्षम नहीं है, तो केवल साहित्यिक या पुस्तक-आधारित शिक्षा का कोई विशेष महत्व नहीं है।

गांधी का शिक्षा-दर्शन- महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शन भारतीय जीवन-दृष्टि, नैतिक मूल्यों तथा मानव-केंद्रित विकास की अवधारणा पर आधारित है। गांधी ने शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास का माध्यम नहीं माना, बल्कि इसे व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण का साधन माना। उनके विचार में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का संतुलित विकास करना है। गांधी के शिक्षा संबंधी विचार उनके व्यापक सामाजिक और राजनीतिक चिंतन से जुड़े हुए हैं। गांधी के अनुसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य के भीतर निहित सर्वोत्तम क्षमताओं को विकसित करती है। उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा के संतुलित विकास का माध्यम माना। उनके विचार में यदि शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान प्रदान करती है और व्यक्ति के नैतिक तथा व्यावहारिक पक्ष की उपेक्षा करती है, तो वह अपने उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकती। गांधी की दृष्टि में शिक्षा जीवन से पृथक् कोई सैद्धांतिक प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि वह जीवन के साथ निरंतर जुड़ी हुई क्रिया थी। वे चाहते थे कि शिक्षा व्यक्ति को वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ते हुए उसे सामाजिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाए।

नई तालीम- गांधी द्वारा प्रतिपादित नई तालीम उनके शिक्षा-दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। नई तालीम की अवधारणा का विकास 1937 के वर्धा शिक्षा सम्मेलन के दौरान हुआ था। इसका मूल उद्देश्य शिक्षा को उत्पादक कार्य और जीवनोपयोगी अनुभवों से जोड़ना था। गांधी का विचार था कि शिक्षा का आधार केवल पुस्तकीय अध्ययन नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे कार्य-आधारित बनाया जाना चाहिए। इसी कारण उन्होंने हस्तशिल्प, कृषि, कताई, कुटीर उद्योग तथा अन्य उत्पादक कार्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया। उनके अनुसार जब विद्यार्थी किसी कार्य को स्वयं करके सीखता है, तब उसका बौद्धिक और व्यावहारिक विकास अधिक प्रभावी ढंग से होता है। नई तालीम के पीछे गांधी की एक महत्वपूर्ण चिंता यह थी कि शिक्षा व्यक्ति को दूसरों पर निर्भर बनाने के बजाय आत्मनिर्भर बनाए। उनका विश्वास था कि यदि शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यावहारिक कौशल प्रदान किए जाएँ, तो वे जीवन में आर्थिक रूप से अधिक सक्षम बन सकेंगे। इसके अतिरिक्त नई तालीम श्रम के प्रति सम्मान तथा कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने का भी माध्यम थी। गांधी का मानना था कि समाज में मानसिक और शारीरिक श्रम के बीच जो कृत्रिम विभाजन उत्पन्न हो गया है, वह सामाजिक असमानता का एक कारण है। इसलिए उन्होंने शिक्षा में श्रम को केंद्रीय स्थान दिया। गांधीवादी शिक्षा के प्रमुख व्याख्याकार जाकिर हुसैन ने लिखा है — “Education must be closely related to life and productive activity.” (शिक्षा का जीवन और उत्पादक

कार्यों से घनिष्ठ संबंध होना चाहिए।) यह विचार गांधी की नई तालीम की मूल अवधारणा को स्पष्ट करता है, जिसमें शिक्षा और जीवन के बीच किसी प्रकार का अलगाव स्वीकार नहीं किया गया है।

शिक्षा और नैतिक विकास— गांधी शिक्षा को नैतिकता से पृथक् नहीं मानते थे। उनके अनुसार ज्ञान तभी उपयोगी है जब वह व्यक्ति के चरित्र और आचरण को बेहतर बनाने में सहायक हो। इसलिए उन्होंने शिक्षा के माध्यम से सत्य, अहिंसा, अनुशासन, सहयोग, सेवा और आत्मसंयम जैसे मूल्यों के विकास पर विशेष बल दिया। गांधी का विश्वास था कि यदि शिक्षा केवल बौद्धिक क्षमता का विकास करे और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करे, तो वह समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है। वे मानते थे कि व्यक्ति के भीतर नैतिक चेतना का विकास किए बिना स्वस्थ समाज की स्थापना संभव नहीं है। उनकी दृष्टि में नैतिक शिक्षा को व्यवहार और जीवन-पद्धति का हिस्सा बनाना आवश्यक था। इसी कारण उन्होंने शिक्षकों के व्यक्तित्व को भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना। गांधी के अनुसार शिक्षक स्वयं नैतिक मूल्यों का पालन करे, तभी वह विद्यार्थियों में उन मूल्यों का प्रभावी विकास कर सकता है। गांधी की शिक्षा संबंधी अवधारणा का अंतिम उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना था जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ नैतिक, उत्तरदायी और आत्मनिर्भर भी हों। उनका शिक्षा-दर्शन व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार गांधी का शिक्षा-दर्शन केवल शिक्षा प्रणाली में सुधार की योजना नहीं था, बल्कि वह मानव जीवन और समाज के पुनर्निर्माण की एक व्यापक परियोजना थी, जिसका उद्देश्य शिक्षा को जीवन, श्रम, नैतिकता और स्वावलंबन से जोड़ना था।

गांधीवादी स्वावलंबन की अवधारणा— महात्मा गांधी के सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक चिंतन में स्वावलंबन की अवधारणा केंद्रीय स्थान रखती है। गांधी ने स्वावलंबन को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं देखा, बल्कि इसे मानव जीवन की व्यापक स्वतंत्रता और आत्मविकास की प्रक्रिया से जोड़कर समझा। उनके अनुसार वास्तविक स्वावलंबन का अर्थ केवल अपनी आजीविका अर्जित करने की क्षमता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक रूप से भी स्वतंत्र होना है। गांधी के लिए स्वावलंबन व्यक्ति की आंतरिक शक्ति, आत्मविश्वास और आत्मसम्मान से जुड़ा हुआ था। उनका मानना था कि जब व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं, निर्णयों और जीवन-पद्धति के लिए अत्यधिक रूप से दूसरों पर निर्भर हो जाता है, तब उसकी स्वतंत्रता सीमित होने लगती है। गांधी की दृष्टि में स्वावलंबन केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी समान रूप से महत्वपूर्ण था। इसी कारण उन्होंने स्वदेशी, ग्राम स्वराज, कुटीर उद्योग तथा श्रम की प्रतिष्ठा जैसे विचारों को अपने चिंतन में विशेष महत्व दिया। वे ऐसे समाज की कल्पना करते थे जहाँ व्यक्ति अपनी क्षमताओं और संसाधनों के आधार पर सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके तथा समाज की उत्पादन प्रक्रिया में सक्रिय योगदान दे सके।

स्वावलंबन के प्रमुख आयाम

1. **आर्थिक आत्मनिर्भरता**— गांधी के अनुसार आर्थिक आत्मनिर्भरता स्वावलंबन का आधारभूत तत्व है। उनका मानना था कि आर्थिक निर्भरता व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करती है तथा समाज में असमानता को जन्म देती है। इसलिए उन्होंने ऐसे आर्थिक ढाँचे का समर्थन किया जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और श्रम के आधार पर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम हो सके। गांधी बड़े पैमाने के औद्योगीकरण के स्थान पर कुटीर उद्योगों, ग्रामोद्योगों और विकेंद्रीकृत उत्पादन व्यवस्था के समर्थक थे।

उनका विश्वास था कि स्थानीय स्तर पर उत्पादन और रोजगार की व्यवस्था समाज को अधिक आत्मनिर्भर बना सकती है। इस प्रकार आर्थिक आत्मनिर्भरता केवल आय प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि सम्मानजनक जीवन का आधार भी बन जाती है।

2. कौशल आधारित शिक्षा— गांधी का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को केवल सैद्धांतिक ज्ञान देने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति में जीवनोपयोगी कौशलों का विकास करे। उनके अनुसार यदि शिक्षा व्यक्ति को कार्य करने की क्षमता और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान नहीं करती, तो वह अधूरी है। इसी उद्देश्य से गांधी ने नई तालीम की अवधारणा प्रस्तुत की जिसमें हस्तशिल्प, कृषि, कताई तथा उत्पादक कार्यों को शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग बनाया गया। गांधी के अनुसार कौशल आधारित शिक्षा व्यक्ति को रोजगार प्राप्त करने का साधन ही नहीं देती, बल्कि उसे आत्मनिर्भर बनने की दिशा में भी अग्रसर करती है।

3. श्रम की प्रतिष्ठा— गांधी ने श्रम को केवल आर्थिक गतिविधि नहीं माना, बल्कि उसे मानव गरिमा और व्यक्तित्व निर्माण का आधार माना। उनका मानना था कि समाज में मानसिक और शारीरिक श्रम के बीच जो विभाजन उत्पन्न हुआ है, उसने असमानता और हीनभावना को जन्म दिया है। वे चाहते थे कि शिक्षा विद्यार्थियों में श्रम के प्रति सम्मान की भावना विकसित करे। गांधी के अनुसार कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता, प्रत्येक प्रकार का श्रम समान रूप से महत्वपूर्ण है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था में श्रम और उत्पादक कार्यों को उचित स्थान मिलना चाहिए।

4. आत्मविश्वास और आत्मसम्मान का विकास— गांधी के अनुसार स्वावलंबन का एक महत्वपूर्ण आयाम व्यक्ति का आंतरिक विकास है। जब व्यक्ति अपनी क्षमताओं पर विश्वास करना सीखता है, तब उसमें आत्मविश्वास और आत्मसम्मान का विकास होता है। यह भावना व्यक्ति को जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करती है। गांधी का विचार था कि शिक्षा व्यक्ति को केवल रोजगार प्राप्त करने योग्य न बनाए, बल्कि उसके भीतर यह विश्वास भी उत्पन्न करे कि वह अपने प्रयासों से अपनी समस्याओं का समाधान कर सकता है। इस प्रकार आत्मविश्वास स्वावलंबन का महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक आधार बन जाता है।

गांधी ने स्वावलंबन के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा था — “Real education consists in drawing the best out of yourself. What better book can there be than the book of humanity.” (वास्तविक शिक्षा का अर्थ मनुष्य के भीतर निहित श्रेष्ठ गुणों का विकास करना है, मानवता से बढ़कर कोई पुस्तक नहीं हो सकती।) इसी संबंध में विनोबा भावे का कथन है कि “शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविका कमाना नहीं, बल्कि मनुष्य के जीवन को विकसित करना और उसे समाज के लिए उपयोगी बनाना है।” उपरोक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि गांधी की स्वावलंबन संबंधी अवधारणा केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता तक सीमित नहीं थी। यह व्यक्ति के संपूर्ण विकास, सामाजिक सहभागिता, श्रम के सम्मान तथा नैतिक स्वतंत्रता पर आधारित एक व्यापक जीवन-दृष्टि थी। वर्तमान समय में जब शिक्षा और रोजगार के बीच असंतुलन, बेरोजगारी तथा अत्यधिक उपभोक्तावाद जैसी समस्याएँ सामने आ रही हैं, तब गांधी की स्वावलंबन संबंधी अवधारणा पुनः प्रासंगिक दिखाई देती है।

शिक्षा और स्वावलंबन का संबंध— महात्मा गांधी के शिक्षा-दर्शन में शिक्षा और स्वावलंबन का संबंध अत्यंत गहरा और परस्पर पूरक है। गांधी का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्ति को साक्षर बनाना या

उसे रोजगार प्राप्त करने योग्य बनाना नहीं होना चाहिए, बल्कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम बनाए तथा उसके भीतर आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करे। उनके अनुसार शिक्षा तभी सार्थक कही जा सकती है जब वह व्यक्ति को केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि अपने कौशल और क्षमता के आधार पर रोजगार सृजित करने वाला बनाए। गांधी ने अपने समय की औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था की आलोचना करते हुए कहा कि उस शिक्षा प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना था जो सरकारी नौकरियों या प्रशासनिक कार्यों के लिए उपयुक्त हों। इस प्रकार की शिक्षा व्यक्ति को बाहरी व्यवस्थाओं पर निर्भर बनाती थी और उसमें सृजनात्मकता तथा आत्मनिर्भरता की भावना का पर्याप्त विकास नहीं कर पाती थी। गांधी इस स्थिति को शिक्षा की एक गंभीर सीमा मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा व्यक्ति के भीतर छिपी हुई क्षमताओं को विकसित करने का माध्यम होनी चाहिए। यदि शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को व्यावहारिक कौशल, श्रम के प्रति सम्मान तथा जीवनोपयोगी ज्ञान प्राप्त होता है, तो वह न केवल स्वयं आत्मनिर्भर बन सकता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

नई तालीम के माध्यम से स्वावलंबन— महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित नई तालीम शिक्षा और स्वावलंबन के मध्य संबंध को व्यावहारिक रूप से स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास था। गांधी का मानना था शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप सक्षम बनाए और उसके भीतर आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करे। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए उन्होंने नई तालीम की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसका मूल उद्देश्य शिक्षा को जीवन, श्रम और उत्पादन प्रक्रिया से जोड़ना था। गांधी का विश्वास था कि विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करके पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो सकता। उसके लिए आवश्यक है कि वह शिक्षा की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए अनुभवों के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया को अपनाए। इसलिए नई तालीम में उन्होंने हस्तशिल्प, उत्पादक कार्यों तथा व्यावहारिक गतिविधियों को विशेष महत्व दिया। उनके अनुसार जब विद्यार्थी किसी कार्य को स्वयं करके सीखता है, तब वह केवल ज्ञान अर्जित नहीं करता, बल्कि उसके भीतर कार्यकुशलता, अनुशासन तथा आत्मविश्वास का भी विकास होता है। इस प्रकार कार्य आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को जीवन की व्यावहारिक आवश्यकताओं से जोड़ती है तथा उनमें आत्मनिर्भर बनने की क्षमता विकसित करती है। नई तालीम का एक महत्वपूर्ण पक्ष शिक्षा और उत्पादन के बीच समन्वय स्थापित करना था। गांधी के अनुसार शिक्षा को उत्पादन प्रक्रिया से अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि जीवन स्वयं निरंतर क्रियाशीलता और सृजन की प्रक्रिया है। उनका विचार था कि विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते समय उत्पादक कार्यों में भी भाग लें, जिससे वे श्रम के महत्व को समझ सकें और कार्य के प्रति सम्मान की भावना विकसित कर सकें। इससे शिक्षा केवल सैद्धांतिक न रहकर अधिक व्यावहारिक और जीवनोपयोगी स्वरूप ग्रहण करती है। गांधी का विश्वास था कि शिक्षा और उत्पादन के इस समन्वय से व्यक्ति समाज की वास्तविक आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझ सकता है। साथ ही गांधी स्थानीय आवश्यकताओं और संसाधनों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के भी समर्थक थे। वे चाहते थे कि शिक्षा का संबंध स्थानीय उद्योगों, ग्रामोद्योगों तथा कुटीर उद्योगों से स्थापित हो ताकि विद्यार्थी अपने सामाजिक परिवेश और आर्थिक परिस्थितियों से परिचित हो सकें। उनके अनुसार स्थानीय संसाधनों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था न केवल विद्यार्थियों को रोजगार संबंधी अवसरों की जानकारी प्रदान करती है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ करने में सहायता करती है। इससे समाज में बाहरी

निर्भरता कम होती है तथा आत्मनिर्भरता की भावना को बल मिलता है। गांधी की दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य आत्मनिर्भर जीवन शैली का निर्माण करना था। वे चाहते थे कि शिक्षा व्यक्ति के भीतर आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और स्वतंत्र चिंतन की क्षमता विकसित करे। ऐसा व्यक्ति न केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम होता है, बल्कि वह समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को भी समझने लगता है। इस प्रकार नई तालीम केवल एक शैक्षिक व्यवस्था नहीं थी, बल्कि वह आत्मनिर्भर, श्रमशील और उत्तरदायी समाज के निर्माण की एक व्यापक योजना थी, जिसमें शिक्षा को जीवन के वास्तविक उद्देश्यों से जोड़ने का प्रयास किया गया था।

गांधी ने शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा था — "True education must correspond to the surrounding circumstances or it is not a healthy growth." (वास्तविक शिक्षा वही है जो व्यक्ति की परिस्थितियों और जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप हो, अन्यथा उसका विकास स्वस्थ नहीं माना जा सकता।) इसी संबंध में जे. सी. कुमारप्पा का यह विचार है — "Education should help an individual to become a useful member of society and enable him to live a meaningful life." (शिक्षा व्यक्ति को समाज का उपयोगी सदस्य बनाने तथा सार्थक जीवन जीने योग्य बनाने में सहायक होनी चाहिए।) उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि गांधी ने शिक्षा को स्वावलंबन का सबसे प्रभावी माध्यम माना। उनकी दृष्टि में शिक्षा केवल रोजगार पाने का साधन नहीं थी, बल्कि वह व्यक्ति के व्यक्तित्व, कौशल, नैतिकता तथा आत्मनिर्भरता के विकास की व्यापक प्रक्रिया थी। वर्तमान समय में बढ़ती बेरोजगारी, कौशल-अभाव तथा शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती दूरी के संदर्भ में गांधी का यह दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

समकालीन संदर्भ में गांधीवादी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता— वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था तीव्र सामाजिक, आर्थिक तथा तकनीकी परिवर्तनों के दौर से गुजर रही है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास तथा बाजारवादी प्रवृत्तियों ने शिक्षा के उद्देश्यों और स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। आज शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित न रहकर रोजगार, कौशल विकास तथा आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है। इसके बावजूद यह तथ्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती दूरी, युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी, कौशल-अभाव तथा शिक्षा के व्यावसायीकरण जैसी समस्याएँ वर्तमान शिक्षा प्रणाली के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ बनकर उभरी हैं। ऐसे परिदृश्य में महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शन तथा स्वावलंबन संबंधी दृष्टिकोण पुनः महत्वपूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि उन्होंने शिक्षा को जीवन, श्रम तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़कर देखने का प्रयास किया था। आज की परिस्थितियों में गांधीवादी शिक्षा-दृष्टिकोण की प्रासंगिकता अनेक स्तरों पर दिखाई देती है। वर्तमान समय में उद्योगों तथा रोजगार के बदलते स्वरूप के कारण कौशल आधारित शिक्षा की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है। केवल सैद्धांतिक ज्ञान विद्यार्थियों को व्यावसायिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम नहीं बना सकता। गांधी ने अपनी नई तालीम की अवधारणा के माध्यम से शिक्षा को कार्य, अनुभव और उत्पादक गतिविधियों से जोड़ने पर बल दिया था, जो वर्तमान कौशल विकास आधारित शिक्षा की आवश्यकता के अनुरूप दिखाई देता है। इसी प्रकार बढ़ती बेरोजगारी की समस्या भी गांधीवादी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता को और अधिक स्पष्ट करती है। गांधी चाहते थे कि शिक्षा व्यक्ति को केवल रोजगार प्राप्त करने वाला न बनाए, बल्कि उसमें ऐसे कौशलों और क्षमताओं का विकास करे जिससे वह स्वयं रोजगार के अवसर उत्पन्न करने में सक्षम बन सके। वर्तमान समय में

स्वरोजगार, स्टार्टअप संस्कृति तथा उद्यमिता के बढ़ते महत्व को देखते हुए गांधी का यह दृष्टिकोण अत्यंत उपयोगी प्रतीत होता है। महात्मा गांधी ने कहा है —"Real education consists in drawing the best out of yourself. What better book can there be than the book of humanity." (वास्तविक शिक्षा व्यक्ति के भीतर निहित श्रेष्ठ गुणों को विकसित करने में निहित है, मानवता से बढ़कर कोई पुस्तक नहीं हो सकती।) इसके अतिरिक्त भारत में चल रहे आत्मनिर्भर भारत अभियान के संदर्भ में भी गांधीवादी विचारों का विशेष महत्व है। गांधी का स्वदेशी तथा स्वावलंबन संबंधी चिंतन स्थानीय संसाधनों, स्थानीय उत्पादन तथा विकेंद्रीकृत आर्थिक संरचना पर आधारित था। वर्तमान परिस्थितियों में यह विचार स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की कमी और शहरों की ओर बढ़ते पलायन की समस्या को देखते हुए गांधीवादी दृष्टिकोण स्थानीय उद्योगों, कुटीर उद्योगों तथा ग्रामोद्योगों के विकास के माध्यम से एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करता है।

हालाँकि गांधीवादी शिक्षा-दृष्टिकोण की समकालीन उपयोगिता के साथ-साथ उसके व्यावहारिक क्रियान्वयन के समक्ष कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का स्वरूप अत्यधिक परीक्षा-केंद्रित हो गया है, जिसमें विद्यार्थियों की सफलता का निर्धारण मुख्यतः अंकों और प्रमाणपत्रों के आधार पर किया जाता है। ऐसी स्थिति में व्यावहारिक ज्ञान, कौशल विकास तथा व्यक्तित्व निर्माण जैसे पक्ष अपेक्षाकृत कम महत्व प्राप्त कर पाते हैं। इसके अतिरिक्त लंबे समय तक व्यावसायिक तथा कौशल आधारित शिक्षा को सामान्य शिक्षा की तुलना में कम महत्व दिए जाने के कारण भी शिक्षा और रोजगार के मध्य असंतुलन उत्पन्न हुआ है। वर्तमान समय में तकनीकी प्रगति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा वैश्विक प्रतिस्पर्धा ने शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में नई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। इसलिए गांधीवादी शिक्षा-दृष्टिकोण को यथावत लागू करने के स्थान पर समकालीन परिस्थितियों के अनुरूप पुनर्व्याख्यायित करने की आवश्यकता अनुभव होती है। नई तालीम की अवधारणा अपने सिद्धांतों की दृष्टि से अत्यंत प्रभावशाली होने के बावजूद इसके व्यापक क्रियान्वयन में प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, संसाधनों की सीमाएँ तथा संस्थागत बाधाएँ भी महत्वपूर्ण चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं। यह विचार स्पष्ट करता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना और ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति के भीतर ऐसी क्षमता विकसित करना भी है जिससे वह स्वयं के साथ-साथ समाज के विकास में सक्रिय योगदान दे सके। इस प्रकार समकालीन परिस्थितियों में गांधीवादी शिक्षा-दृष्टिकोण न केवल प्रासंगिक प्रतीत होता है, बल्कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के पुनर्मूल्यांकन के लिए एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार भी प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष— प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शन केवल औपचारिक शिक्षा प्रणाली तक सीमित विचार नहीं था, बल्कि वह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास से जुड़ी हुई एक व्यापक अवधारणा थी। गांधी ने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति या साक्षरता का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया के रूप में देखा। इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि गांधी की स्वावलंबन संबंधी अवधारणा केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता तक सीमित नहीं थी। उनके लिए स्वावलंबन का अर्थ व्यक्ति की मानसिक स्वतंत्रता, सामाजिक सहभागिता, श्रम के प्रति सम्मान तथा आत्मविश्वास के विकास से भी था। गांधी का विश्वास था कि यदि शिक्षा व्यक्ति के भीतर जीवनोपयोगी कौशल, श्रमशीलता तथा आत्मनिर्भरता की भावना विकसित नहीं करती,

तो वह अपने वास्तविक उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सकती। गांधी द्वारा प्रतिपादित नई तालीम इस दृष्टिकोण का व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करती है। नई तालीम शिक्षा को जीवन, श्रम और उत्पादन प्रक्रिया से जोड़ती है तथा विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रखकर उन्हें व्यावहारिक अनुभवों और कौशलों से भी संपन्न बनाती है। इसका उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करने योग्य व्यक्तियों का निर्माण करना नहीं था, बल्कि ऐसे नागरिकों का निर्माण करना था जो अपने श्रम, क्षमता और रचनात्मकता के आधार पर समाज के विकास में योगदान दे सकें। वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था अनेक चुनौतियों से घिरी हुई है। बढ़ती बेरोजगारी, कौशल-अभाव, शिक्षा का व्यावसायीकरण, परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण तथा शिक्षा और रोजगार के मध्य बढ़ती दूरी जैसी समस्याएँ शिक्षा प्रणाली की सीमाओं को स्पष्ट करती हैं। ऐसे समय में गांधीवादी शिक्षा-दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि वह शिक्षा को जीवन की वास्तविक आवश्यकताओं से जोड़ने का प्रयास करता है। गांधी ने शिक्षा के व्यापक उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा था — "By education I mean an allround drawing out of the best in child and man — body, mind and spirit." (शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में निहित श्रेष्ठ गुणों के सर्वांगीण विकास से है।)

अतः इस अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गांधी का शिक्षा-दर्शन वर्तमान समय की शैक्षिक चुनौतियों के समाधान के लिए एक महत्वपूर्ण वैचारिक दिशा प्रदान करता है। यदि शिक्षा व्यवस्था में गांधी के विचारों के अनुरूप कौशल विकास, श्रम की प्रतिष्ठा, नैतिक मूल्यों तथा आत्मनिर्भरता के तत्वों को समुचित स्थान दिया जाए, तो एक ऐसे समाज का निर्माण संभव हो सकेगा जो केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक दृष्टि से भी अधिक सशक्त और उत्तरदायी हो।

संदर्भ—

Gandhi, Mohandas Karamchand. The Collected Works of Mahatma Gandhi (CWMG). Publications Division, Government of India, New Delhi, 1958–1994.

Husain, Zakir. Basic National Education. Hindustani Talimi Sangh, Sevagram, Wardha, 1951.

Kumarappa, J. C. Economy of Permanence. Sarva Seva Sangh Prakashan, Varanasi, 1945.